22-2-84

संगम पर चार कम्बाइन्ड रुपों का अनुभव

सिद्धि स्वरुप का अनुभव कराने वाले, वरदाता बाप अपने विजयी बच्चों प्रति बोले:-

''आज बापदादा सभी बच्चों के कम्बाइन्ड रुप को देख रहे हैं। सभी बच्चे भी अपने कम्बाइन्ड रुप को अच्छी रीति जानते हो? एक – श्रेष्ठ आत्मायें, इस अन्तिम पुराने लेकिन अति अमूल्य बनाने वाले शरीर के साथ कम्बाइन्ड हो। सभी श्रेष्ठ आत्मायें इस शरीर के आधार से श्रेष्ठ कार्य और बापदादा से मिलन का अनुभव कर रही हो। है पुराना शरीर लेकिन बलिहारी इस अन्तिम शरीर की है जो श्रेष्ठ आत्मा इसके आधार से अलौकिक अनुभव करती है। तो आत्मा और शरीर कम्बाइन्ड है। पुराने शरीर के भान में नहीं आना है लेकिन मालिक बन इस द्वारा कार्य कराने हैं। इसलिए आत्म-अभिमानी बन कर्मयोगी बन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते हैं।

दूसरा– अलौकिक विचित्र कम्बाइन्ड रुप। जो सारे कल्प में इस कम्बाइन्ड रुप का अनुभव सिर्फ अब कर सकते हो। वह है ''आप और बाप''। इस कम्बाइन्ड रुप का अनुभव। सदा मास्टर सर्वशक्तिवान सदा विजयी सदा सर्व के विघ्न विनाशक। सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ कर्म द्वारा विश्व कल्याणकारी स्वरुप का अनुभव कराता है। सेकण्ड में सर्व सम-

स्याओं का समाधान स्वरुप बनाता है। स्वयं के प्रति वा सर्व के प्रति दाता और मास्टर वरदाता बनाता है। सिर्फ इस कम्बाइन्ड रुप में सदा स्थिति रहो तो सहज ही याद और सेवा के सिद्धि स्वरुप बन जाओ। विधि निमित्त मात्र हो जायेगी और सिद्धि सदा साथ रहेगी। अभी विधि में ज्यादा समय लगता है। सिद्धि यथा शक्ति अनुभव होती है। लेकिन जितना इस अलौकिक शक्तिशाली कम्बाइन्ड रुप में सदा रहेंगे तो विधि से ज्यादा सिद्धि अनुभव होगी। पुरुषार्थ से प्राप्ति ज्यादा अनुभव होगी। सिद्धि स्वरुप का अर्थ ही है हर कार्य में सिद्धि हुई पड़ी है। यह प्रैक्टिकल में अनुभव हो।

तीसरा कम्बाइन्ड रुप्:- हम सो ब्राह्मण सो फरिश्ता। ब्राह्मण रुप और अन्तिम कर्मातीत फरिश्ता स्वरुप। इस कम्बाइन्ड रुप की अनुभूति विश्व के आगे साक्षात्कार मूर्त बनायेगी। ब्राह्मण सो फरिश्ता इस स्मृति द्वारा चलते-फिरते अपने को व्यक्त शरीर, व्यक्ति देश में पार्ट बजाते हुए भी ब्रह्मा बाप के साथी अव्यक्त वतन के फरिश्ते व्यक्त देश और देह में आये हैं विश्व सेवा के लिए। ऐसे व्यक्त भाव से परे अव्यक्त रुपधारी अनुभव करेंगे। यह अव्यक्त भाव अर्थात् फरिश्ते-पन का भाव स्वत: ही अव्यक्त अर्थात् व्यक्तपन के बोल-चाल, व्यक्त भाव के स्वभाव, व्यक्त भाव के संस्कार सहज ही परिवर्तन कर लेंगे। भाव बदल गया तो सब कुछ बदल जायेगा। ऐसा अव्यक्त भाव सदा स्वरूप में लाओ। स्मृति में हैं कि ब्राह्मण सो फरिश्ता। अब स्मृति को स्वरुप में लाओ। स्वरुप निरन्तर स्वत: और सहज हो जाता है। स्वरुप में लाना अर्थात् सदा हैं ही अव्यक्त फरिश्ता। कभी भूले, कभी स्मृति में आवे इस स्मृति में रहना पहली स्टेज हैं। स्वरुप बन जाना यह श्रेष्ठ स्टेज है।

चौथा है:- भिवष्व चर्तुभुज स्वरुप। लक्ष्मी और नारायण का कम्बाइन्ड रुप क्योंकि आत्मा में इस समय लक्ष्मी और नारायण दोनों बनने के संस्कार भर रहे हैं। कब लक्ष्मी बनेंगे, कब नारायण बनेंगे। भविश्य प्रालब्ध का यह कम्बाइन्ड स्वरुप इतना ही स्पष्ट हो। आज फरिश्ता कल देवता। अभी-अभी फरिश्ता, अभी-अभी देवता। अपना राज्य अपना राज्य स्वरुप आया कि आया। बना कि बना। ऐसे संकल्प स्पष्ट और शक्तिशाली हों क्योंकि आपके इस स्पष्ट समर्थ संकल्प के इमर्ज रुप से आपका राज्य समीप आयेगा। आपका इमर्ज संकल्प नई सृष्टि को रचेगा अर्थात् सृष्टि पर लायेगा। आपका संकल्प मर्ज है तो नई सृष्टि इमर्ज नहीं हो सकती। ब्रह्मा से साथ ब्राह्मणों के इस संकल्प द्वारा नई सृष्टि इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी। ब्रह्मा बाप भी नई सृष्टि में नया पहला पार्ट बजाने के लिए आप ब्राह्मण बच्चों के लिए, साथ चलेंगे के वायदे कारण इन्तजार कर रहे हैं। अकेला ब्रह्मा सो कृष्ण बन जाए, तो अकेला क्या करेगा। साथ में पढ़ने वाले, खेलने वाले भी चाहिए ना। इसलिए ब्रह्मउ बाप ब्राह्मणों प्रति बोले कि मुझ अव्यक्त रुपधारी बाप समान अव्यक्त रुपधारी, अव्यक्त स्थिति धारी फरिश्ता रुप बनो। फरिश्ता तो देवता बनेंगे। समझा। इन सब कम्बाइन्ड रुप में स्थित रहने से ही सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जायेंगे। बाप समान बन सहज ही कर्म में सिद्धि का अनुभव करेंगे।

डबल विदेशी बच्चों को बापदादा से रुह-रुहान करने वा मिलन मनाने की इच्छा तीव्र है। सभी समझते हैं कि हम ही आज मिल लेवें। परन्तु इस साकार दुनिया में सब देखना पड़ता है। सूर्य चांद के अन्दर की दुनिया है ना। उनसे परे की दुनिया में आ जाओ तो सारा समय बैठ जाओ। बापदादा को भी हर बच्चा अपनी-अपनी विशेषताओं से प्रिय है। कोई समझे यह प्रिय है हम कम प्रिय हैं। ऐसी बात नहीं है। महारथी अपनी विशेषता से प्रिय हैं और बाप के आगे अपने-अपने रुप से सब महारथी हैं। महान आत्मायें हैं। इसलिए महारथी हैं। यह तो कार्य चलाने के लिए किसको स्नेह से निमित्त बनाना होता है। नहीं तो कार्य के निमित्त अपना-अपना स्थान मिला हुआ है। अगर सभी दादी बन जाएं तो काम चलेगा? निमित्त तो बनाना पड़े ना। वैसे अपनी रीति से सब दादियां हो। सभी को दीदी वा दादी कहते तो हैं ना। फिर भी आप सबने मिलकर एक को निमित्त तो बनाया है ना। सभी ने बनाया वा सिर्फ बाप ने बनाया। या सिर्फ निमित्त कारोबार अर्थ अपने-अपने कार्य अनुसार निमित्त बनाना ही पड़ता है। इसका यह मतलब नहीं कि आप महारथी नहीं हो। आप भी महारथी हो। महावीर हो। माया को चैलेन्ज करने वाले महारथी नहीं हुए तो क्या हुए।

बापदादा के लिए सप्ताह कोर्स करने वाला बच्चा भी महारथी है क्यांकि सप्ताह कोर्स भी तब करते जब समझते हैं कि यह श्रेष्ठ जीवन बनाती है। चैलेन्ज किया तो महारथी महावीर हुआ। बापदादा सदैव एक सलोगन सभी बच्चों को कार्य में लाने लिए याद दिलाते रहते। एक है अपनी स्वस्थिति में रहना। दूसरा है कारोबार में आना। स्वस्थिति में तो सभी बड़े हो कोई छोटा नहीं। कारोबार में निमित्त बनाना ही पड़ता है। इसलिए कारोबार में सदा सफल होने का सलोगान है रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना। दूसरे को रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। देने में लेना भरा हुआ है। रिगार्ड दो और रिगार्ड मिलेगा। रिगार्ड लेने का साधन ही है देना। आप रिगार्ड दो और आपको नहीं मिले यह हो नहीं सकता। लेकिन दिल से दो। मतलब से नहीं। जो दिल से रिगार्ड देता है उसको दिल से रिगार्ड मिलता है। मतलब का रिगार्ड देंगे तो मिलेगा भी मतलब का। सदैवी दिल से दो और दिल से लो। इस सलोगन द्वारा सदा ही निर्विघ्न निर-संकल्प निश्चिन्त रहेंगे। मेरा क्या होगा यह चिन्ता नहीं रहेगी। मेरा हुआ ही पड़ा है। बना ही पड़ा है। निश्चिन्त रहेंगे। और ऐसी श्रेष्ठ आत्मा की श्रेष्ठ प्रालब्ध वर्तमान और भविष्य निश्चिन्त ही है। कोई इसको बदल नहीं सकता। कोई किसकी सीट ले नहीं सकता। निश्चित है। निश्चिन्त की निश्चित है। इसको कहा जाता है बाप समान फालो फादर करने वाले। समझा।

डबल विदेशी बच्चों पर तो विशेष स्नेह है। मतलब का नहीं। दिल का स्नेह है। बापदादा ने सुनाया था एक पुराना गीत हैं ऊंची-ऊंची

दीवारें... यह डबल विदेशियों का गीत है। समुद्र पार करते हुए, धर्म, देश, भाषा सब ऊंची-ऊंची दीवारें पार करके बाप के बन गये। इसलिए बाप को प्रिय हो। भारतवासी तो थे ही देवताओं के पुजारी। उन्होंने ऊंची दीवारें पार नहीं की। लेकिन आप डबल विदेशियों ने यह ऊंची-ऊंची दीवारें कितना सहज पार की। इसलिए बापदादा दिल से बच्चों की इस विशेषता का गीत गाते हैं। समझा। सिफ्र खुश करने के लिए नहीं कर रहे हैं। कई बच्चे रमत-गमत में कहते हैं कि बापदादा तो सभी को खुश कर देते हैं। लेकिन खुश करते हैं अर्थ सै। आप अपने से पूछो बापदादा ऐसे ही कहते हैं या यह प्रैक्टिकल है! ऊंची-ऊंची दीवारें पार कर आ गये हो ना! कितनी मेहनत से टिकेट निकालते हो। यहां से जाते ही पैसे इकट्ठे करते हो ना। बापदादा जब बच्चों का स्नेह देखते हैं स्नेह से कैसे पहुँचने के लिए साधन अपनाते हैं, किस तरीके से पहुँचते हैं, बापदादा स्नेही आत्माओं का स्नेह का साधन देख, लगन देख, खुश होते हैं। दूर वालों से पूछों कैसे आते हैं? मेहनत करके फिर भी पहुँच तो जाते हैं ना। अच्छा–

सदा कम्बाइन्ड रुप में स्थित रहने वाले, सदा बाप समान अव्यक्त भाव में स्थित रहने वाले, सदा सिद्धि स्वरुप अनुभव करने वाले, अपने समर्थ समान स्वरुप द्वारा साक्षात्कार कराने वाले, ऐसे सदा निश्चिन्त, सदा निश्चित विजयी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमतस्ते।''

सानफ्रंसिसको:- सभी स्वयं को सारे विश्व में विशेष आत्मायें हैं – ऐसे अनुभव करते हो? क्योंकि सारे विश्व की अनेक आत्माओं में से बाप को पहचानने का भागय आप विशेष आत्माओं को मिला है। ऊंचे ते ऊंचे बाप को पहचानना यह कितना बड़ा भाग्य है! पहचाना और सम्बन्ध जोड़ा और प्राप्ति हुई। अभी अपने को बाप के सर्व खजानों के मालिक अनुभव करते हो? जब सदा बच्चें हैं तो बच्चें माना ही अधिकारी। इसी स्मृति से बार-बार रिवाइज करो। मैं कौन हूँ! किसका बच्चा हूँ! अमृतवेले शक्तिशाली स्मृति स्वरुप का अनुभव करने वाले ही शक्तिशाली रहते हैं। अमृतवेला शक्तिशाली नहीं तो सारे दिन में भी बहुत विघ्न आयेंगे। इसलिए अमृतवेला सदा शक्तिशाली रहे। अमृवेले पर स्व्यं बाप बच्चों को विशेष वरदान देने आते हैं। उस समय जो वरदान लेता है उसका सारा दिल सहजयोगी की स्थिति में रहता है। तो पढ़ाई और अमृतवेले का मिलन यह दोनों ही विशेष शक्तिशाली रहें। तो सदा ही सेफ रहेंगे।

जर्मनी ग्रुप से:- सदा अपने को विश्व कल्याणकाकरी बाप के बच्चे विश्व कल्याणकारी आत्मायें समझते हो? अर्थात् सर्व खजानों से भरपूर। जब अपने पास खजाने सम्पन्न होंगे तब दूसरों को देंगे ना! तो सदा सर्व खजानों से भरपूर आत्माएं बालक सो मालिक हैं! ऐसा अनुभव करते हो? बाप कहा माना बालक सो मालिक हो गया। यही स्मृति विश्व कल्याणकारी स्वत: बना देती है। और यही स्मृति सदा खुशी में उड़ाती है। यही ब्राह्मण जीवन है। सम्पन्न रहना, खुशी में उड़ना और सदा बाप के खजानों के अधिकार के नशे में रहना। ऐसे श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें हो।

1984

वरद वाणियाँ

पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष की अव्यक्त वाणियाँ भी ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के अनगिनत एवं अनमोल रहस्यों रूपी रत्नों की खान हैं। यद्यपि इनमें कुछ ऐसे विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है जिनकी चर्चा पहले भी अव्यक्त वाणियों में हो चुकी है तो भी इन प्रचुर मात्रा में नई प्रेरणाएँ, नये दृष्टिकोण और नये ज्ञान-बिन्दू उपलब्ध होते हैं। विषय वही होने पर भी इनमें धारणा-सम्बन्धी निर्देश भी जीवन में ताज़गी लाने वाले और उसे नया बनाने वाले हैं। उदाहरण के तौर पर (१) होली, (२) मायाजीत और प्रकृतिजीत बनने की विधि, (३) व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ बनने के साधन, (४) संगम युगी जीवन अमूल्य कैसे है? ये तथा अन्य कुछ विषय ऐसे हैं जिन पर पहले भी हमें ईश्वरीय महावाक्य सुनने और पढ़ने को मिले हैं, परन्तु अब इन विषयों पर जो अव्यक्त वाणियाँ यहाँ संग्रहीत की गई हैं, उनको पढ़ने से आपको यह अनुभव होगा कि अब इसपर जो कुछ कहा गया है, वह किसी-न-किसी तरह नवीन और प्रभावशाली ही है। परमपिता परमात्मा की यही तो विशेषता है कि वे किसी एक विषय पर भी हर बार तत्क्षण ही नये, उच्च और प्रेरणादायक महावाक्य उच्चारण करते हैं।

''काम'' पर विजय प्राप्त करने की युक्तियों का ज्ञान तो इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के प्रारम्भ ही से दिया जाता रहा है। परन्तु हर बार उनसे सम्बन्धित वाणियों में एक नया चिन्तन, नया उद्बोधन और नई युक्ति उएपलब्ध होती रही है। इस पर भी जो वाणी संग्रह इस समय पाठकों के हाथ में है, उसमें एक वाणी में ''काम'' की जो परिभाषा, व्याख्या और उस पर विजयी होने के लिए जो विधि-विधान समझाए और सुझाए गए हैं, वे आत्मा को पवित्रता की पराकाष्ठा पर ले जाने वाले ओर अनुपम ही हैं। इसी प्रकार, सतयुग अथवा स्वर्ण युग पर भी प्रकाश तो पहले भी कई वाणियों में डाला जा चुका है, परन्तु इस वर्ष की कुछ वाणियों में उसका विस्तृत एवं नवीन वर्णन है।

नये प्रकार से महत्व-दर्शन

न केवल कुछ विषयों पर ज्ञान-बिन्दु नये मिले हैं बल्कि कुछ दिव्य गुणों, नैतिक मूल्यों अथवा धारणाओं का नये तरीके से महत्व दर्शाया गया है। उनको सुनने अथवा पढ़ने से उनको व्यावहारिक जीवन में धारण करने के प्रति विशेष ध्यान जाता है क्योंकि इन वाणियों में उनकी धारणा पर नये तरीके से बल (New Emphasis) डाला गया है। उदाहरण के तौर पर एक वाणी में कहा गया है कि सहयोगी ही योगी है। दूसरी एक वाणी में ईश्वरीय स्नेह के महत्व को दर्शाते हुए यह समझाया गया है कि (ईश्वरीय) मोहब्बत करनेवाले को मेहनत कम करनी पड़ती है। इस प्रकार मोहब्बत और मेहनत के बारे में बताकर ईश्वरीय स्नेह, जो तिरोभावित (merged) है को आविर्भावित (emerge) करने की सबल प्रेरणा दी गई है। इसी प्रकार सत्यता की शक्ति और शीतलता की शक्ति का भी बहुत मनोरम रीति से महत्व समझाया गया है। इनको पढ़ने से आज के दूषित वातावरण में दूसरे की कमियों को न देख, स्वयं में इन गुणों को धारण करने के लिए मन सहज ही और स्वत| ही तैयार हो जाता है।

साधन और सिद्धि-दोनों पर प्रकाश

इन वाणियों में दिव्य गुणों को धारण करने का केवल महत्व नहीं दर्शाया हुआ व उनको धारण करने से प्राप्त होने वाली सिद्धि ही का केवल वर्णन नहीं किया हुआ बल्कि उन्हें धारण करने अथवा उन सिद्धियों को प्राप्त करने के सहज साधन पर भी प्रकाश डाला गया है। उदाहरण के तौर पर केवल यही नहीं कहा गया है कि हमारे संकल्प ऐसे दृढ़, शुद्ध और बलवान हों कि वह सफल हों और उन द्वारा विशेष सेवा हो बल्कि उन संकल्पों को सफल करने की विधि का भी इनमें उल्लेख है। इसी प्रकार शुभ चिन्तक कैसे बनें-इसकी विधि का स्पष्ट वर्णन है।

आध्यात्म की उच्चतम कोटि पर ले जाने वाले महावाक्य

इन अव्यक्त वाणियों में ''मनसा सेवा'' जैसे सूक्ष्म विषयों पर भी स्पष्ट रूप से समझाया गया है। हमारा मन और हमारे संकल्प ऐसे शुद्ध, पवित्र और योगयुक्त हो जायें कि हम दूर बैठे हुए भी आत्माओं को शान्ति और शीतलता देने की सेवा कर सकें-इससे बढ़कर और क्या सिद्धि हो सकती है? आधुनिक विज्ञान की राजयोग रूप विज्ञान के साथ तुलना करते हुए राजयोग के इस पक्ष पर जो प्रकाश डाला गया है, वह बहुत ही उत्साहवर्धक और प्रेरणाप्रद है और महानता के शिखर पर ले जाने वाला है।

ये वाणियाँ-आत्मा के लिए एक प्रकार का माजून

संक्षेप में हम यह कहेंगे कि इन वाणियों में आत्मा के बहुमुखी विकास के लिए प्रचुर सामग्री है। इनमें विशेष आत्माओं के कर्तव्यों का भी वर्णन है और परमपिता परमात्मा से प्राप्त होने वाले जन्मसिद्ध अधिकार का भी। इनमें नये वर्ष पर नया संकल्प लेने की भी बात है और पुराने संस्कारों को अन्त करने की भी चर्चा की गई है। इनमें दिव्य जन्म के गिफ्ट (Gift) के रूप में दिव्य नेत्र प्राप्त करने की भी सम्मति है और दिव्य बुद्धि की प्राप्ति पर भी एक विस्तृत चर्चा की कई है। गोया ये वाणियाँ आत्मा के लिए शक्तिप्रद, स्वास्थ्यप्रद, प्रकाशप्रद, शान्तिप्रद, आनन्दप्रद और सर्व लाभप्रद वरदान की तरह हैं जिन्हें बार-बार पढ़ने को मन करता है।